पतझर में टूटी पत्तियाँ

लेखक परिचय: रविंद्र केलेकर

रविंद्र केलेकर का जन्म 7 मार्च 1925 को कोंकण क्षेत्र में हुआ। वे छात्र जीवन से ही "गोवा मुक्ति आंदोलन" से जुड़ गए थे। रविंद्र केलेकर गाँधीवादी विचारों से प्रभावित थे। आपने अपने लेखन में सामाजिक जीवन के विभिन्न पक्षों, मान्यताओं और विचारों को रखा। रविंद्र केलेकर कोंकणी एवं मराठी भाषा के मुख्य लेख कों व पत्रकारों में से एक हैं। गोवा कला अकादमी के साहित्य पुरस्कार के साथ अन्य कई पुरस्कारों से आप को सम्मानित किया गया।

पाठ परिचय

(I) गिन्नी का सोना

शुद्ध सोना व शुद्ध आदर्श: गिन्नी का सोना वह सोना होता है, जिसमें थोड़ी सी मिलावट होती है। इसी सोने से गहने बनते हैं। शुद्ध सोने में किसी प्रकार की मिलावट नहीं होती। ठीक उसी प्रकार शुद्ध आदर्शों में किसी प्रकार की व्यावहारिकता की मिलावट नहीं होती।

प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट: प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट लोग बातें तो आदर्शों की करते हैं, परंतु जब व्यावहारिकता की बात आती है, तब आदर्श पीछे हटने लगते हैं और व्यावहारिकता सामने आने लगती है।

गाँधी जी व उनके आदर्श: कुछ लोगों का मानना है गाँधीजी प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट थे, परंतु गाँधीजी व्यावहारिकता के स्तर तक आदर्शों को नहीं गिराते थे, बल्कि व्यावहारिकता को आदर्शों के जितना ऊँचा उठा देते थे। वह सोने में ताँबे की मिलावट करके सोने के मूल्य को कम नहीं करते थे, बल्कि ताँबे में सोने की मिलावट करके उसके मूल्य को बढ़ा देते थे।

व्यवहारवादी व आदर्शवादी लोगों में अंतर: व्यवहारवादी लोग जो भी कार्य करते हैं उसमें लाभ-हानि देखते हैं, हर काम में अपना लाभ देखते हैं। जबकि आदर्शवादी गाँधी जी जैसे लोग खुद तो ऊपर चढ़ते ही हैं, दूसरों को भी ऊपर ले जाते हैं। समाज में शाश्वत मूल्य जैसा जो कुछ भी है, आदर्शवादी लोगों का दिया है।

(II) झेन की देन

जापानियों के मानसिक रोग का कारण: जापान के अस्सी प्रतिशत लोग मानसिक रोगी हैं। इसका कारण है-जापानियों के जीवन की रफ्तार बहुत तेज है। वे चलते नहीं, दौड़ते हैं। बोलते नहीं, बकते हैं। अकेले में अपने आप से ही बड़बड़ाते रहते हैं। वे लोग अमेरिका से मुकाबला करते हैं। जापानी एक महीने में पूरा होने वाला काम एकदिन में पूरा करना चाहते हैं। वैसे ही दिमाग की रफ्तार बहुत तेज होती है, जापानी उसमें स्पीड का इंजन लगा देते हैं। इससे उसकी गति और बढ़ जाती है। एक समय ऐसा आता है उनका तनाव बहुत बढ़ जाता है, इसीलिए जापान में मानसिक रोग अधिक बढ़ रहे हैं।

टी-सेरेमनी और उसका प्रभाव: लेखक अपने मित्र के साथ टी-सेरेमनी में गया। यह चाय पीने की एक विधि है। लेखक अपने मित्र के साथ एक छः मंजिला इमारत की छत पर पहुँचा, जहाँ दफ्ती की दीवारों व चटाई की छत वाली एक कुटिया थी। कुटिया के बाहर एक बेढबसा मिट्टी का बर्तन था, जिसमें पानी था। लेखक व उसके मित्र ने अपने हाथ पैर धोए और तोलिए से पौंछकर कुटिया में गए, जहाँ चाज़ीन था। उसने उन्हें सलाम किया तथा बैठने का स्थान दिया। इसके बाद उसने अंगीठी सुलगाई, उस पर चाय दानी रखी और तोलिए से बर्तन पौंछने लगा। चाज़ीनये सब क्रियाएँ बहुत गरिमापूर्ण ढंग से कर रहा था। ऐसे लग रहा था जैसे राग जयजयवंती के स्वर गूँज रहे हों। चाय तैयार होने पर उन्हें प्यालों में भरा गया। प्याले में चाय दो घूंट से अधिक नहीं थी, जिसे एक-एक बूंद पीना था। वहाँ तीन से अधिक व्यक्ति प्रवेश नहीं कर सकते थे, क्योंकि सेरेमनी में शांति मुख्य बात है। चाय पीते हुए पहले दस-पंद्रह मिनट लेखक उलझन में

रहा। इसके बाद दिमाग की रफ्तार कम होने लगी। आज का मनुष्य या तो बीते दिनों की खट्टी-मीठी यादों में खोया रहता है या फिर आने वाले कल की चिंता करता है। असल में यह सब काल झूठ हैं। एक (भूत काल) चला गया है और दूसरा (भविष्य काल) आया ही नहीं। वास्तव में वर्तमान ही सत्य है, उसी में जीना चाहिए। चाय पीते समय लेखक के सामने केवल वर्तमान था, वह सब कुछ भूल गया था।

टी-सेरेमनी झेन की देन है, जो जापान के लोगों के तेज रफ्तार जीवन के लिए वरदान है।

VASUNDHARAHINDI.COM

प्रश्नोत्तर

गिन्नी का सोना

प्रश्न 1) शुद्ध सोना और गिन्नी का सोना अलग-अलग क्यों होता है?

उत्तर: शुद्ध सोने में किसी प्रकार की मिलावट नहीं होती, गिन्नी के सोने में ताँबे की मिलावट होती है। इसमें अधिक चमक होती है और यह अधिक मजबूत होता है।स्त्रियाँ भी इसी गिन्नी के सोने से गहने बनाती हैं।

प्रश्न 2) प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट किसे कहते हैं?

उत्तर: प्रैक्टिकलआइडियालिस्ट व्यावहारिक लोग होते हैं। बात आदर्शों की करते हैं तथा अपने हित के लिए आदर्श और व्यावहारिकता की मिलावट करते हैं। धीरे-धीरे आदर्श पीछे हटते जाते हैं और व्यावहारिकता आगे आने लगती है।

प्रश्न 3) पाठ के संदर्भ में शुद्ध आदर्श क्या है?

उत्तर: शुद्ध आदर्श वे सिद्धांत हैं, जिनमें किसी प्रकार की मिलावट नहीं होती। इन आदर्शों का पालन करने वालेलोग ही समाज को बदलते हैं। गाँधी जी ने व्यावहारिकता को भी आदर्शों के जितना ऊँचा उठा दिया था।

प्रश्न 4) शुद्ध आदर्श की तुलना सोने से और व्यावहारिकता की तुलनाताँबे से क्यों की गई है?

उत्तर: शुद्ध आदर्श शुद्ध सोने जैसे होते हैं। समाज में होने वाले परिवर्तन शुद्ध आदर्शों के कारण ही होते हैं तथा संसार के शाश्वत मूल्य यही हैं। व्यावहारिकता ताँबे के समान होती है। जैसे ताँबा सोने में मिलकर सोने के मूल्य को कम कर देता है, वैसे ही व्यावहारिकता आदर्शों में मिलकर आदर्शों का मूल्य कम कर देती है।

VASUNDHARAHINDI.COM

प्रश्न 5) “गाँधी जी में नेतृत्व की अद्भुत क्षमता थी।” उदाहरण सहित इस बात की पुष्टि कीजिए।

उत्तर: गाँधी जी में नेतृत्व की अद्भुत क्षमता थी। उसी का परिणाम था कि उन्होंने सत्य, अहिंसा जैसे आदर्शों कोअपना कर नकेवल भारत को स्वतंत्र करवाया, बल्कि संसार को भी संदेश दिया कि सभी लड़ाइयाँ अस्त्र-शस्त्रों से ही नहीं जीती जाती, बल्कि सत्य, अहिंसा के द्वारा भी जीती जा सकती हैं।

प्रश्न 6) आपके विचार से कौन से ऐसे मूल्य हैं, जो शाश्वत हैं? वर्तमान समय में इन मूल्यों की प्रासंगिकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः सत्य, अहिंसा, प्रेम, करुणा, दया आदि शाश्वत मूल्य हैं। ये मूल्य सदा ही प्रासंगिक रहे हैं। महात्मा बुध्द, ईसा मसीह आदि ने इन मूल्यों का सदा पालन किया। गाँधीजी ने भी इन्हीं शाश्वत मूल्यों को अपना कर भारत को स्वतंत्र करवाया तथा संसार को भी सत्य, अहिंसा का संदेश दिया।

प्रश्न 7) अपने जीवन की किसी घटना का उल्लेख कीजिए:-

(I) जब शुद्ध आदर्श से आपको हानि-लाभ हुआ हो।

(II) शुद्ध आदर्श में व्यावहारिकता का पुट देने से लाभ हुआ हो।

उत्तर:(I) शुद्ध आदर्श से मुझे लाभ हुआ। परीक्षा चल रही थी। उसे एक प्रश्न का उत्तर नहीं आता था। वह मुझे बार-बार उत्तर बताने के लिए कह रहा था। उसके बहुत कहने पर मैं उसे उत्तर बताने लगा। उसी समय अध्यापक ने मुझे पकड़ लिया। पकड़े जाने पर मैंने सब सच बता दिया। मेरे सच बोलने पर अध्यापक ने मुझे केवल डाँटा और छोड़ दिया।

(II) मुझे भी शुद्ध आदर्श में व्यावहारिकता की मिलावट करने पर लाभ हुआ।मुझ से गलती हो गई। अगर मेरी गलती मेरे घर वालों को पता चलती, तो मुझे बहुत डाँट लगती, क्योंकि उस गलती के कारण पिताजी के व्यापार में भी नुकसान हो सकता था। मैंने अपने मित्र से इस पर बात की। मित्र ने कहा- कभी सबके हित के लिए सत्य को छुपा लेना चाहिए। मैंने ऐसा ही किया। परिणाम स्वरुप मेरी गलती छुप गई और नुकसान बच गया।

प्रश्न 8) “शुद्ध सोने में ताँबे की मिलावट या ताँबे में सोना” गाँधी जी के आदर्श और व्यवहार के संदर्भ में यह बात किस तरह झलकती है?

उत्तर: शुद्ध सोने में ताँबे की मिलावट करने पर सोने का मूल्य कम हो जाता है, परंतु ताँबे में सोने की मिलावट करने पर ताँबे का मूल्य बढ़ जाता है। स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई लड़ते हुएगाँधी जी ने आदर्शों में व्यावहारिकता की मिलावट नहीं की, बल्कि व्यावहारिकता को इतना ऊँचा उठा दिया कि व्यावहारिकता भी आदर्शों के समान महत्वपूर्ण बन गई, अर्थात् उन्होंने आदर्शों(शुद्ध सोने) के मूल्य को कम नहीं किया, बल्कि व्यावहारिकता(ताँबे) को सोने जितना मूल्यवान बना दिया।

प्रश्न 9) “समाज के पास अगर शाश्वत मूल्यों जैसा कुछ है, तो वह आदर्शवादी लोगों का ही दिया हुआ है।” स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: समाज में शाश्वत मूल्यसत्य, अहिंसा, प्रेम, करुणा, दया आदि आज भी हैं।यह मूल्य आज भी केवल इसलिए हैं क्योंकि महात्मा बुद्ध, महावीर स्वामी,गाँधी जी आदि महापुरुषों ने शाश्वत मूल्यों का पालन करके समाज की बुराइयों को दूर किया और एक नए समाज का निर्माण किया। जब-जब समाज ऐसी स्थिति में पहुँचा, जब परिवर्तन चाहिए,तब-तब आदर्शवादी लोगों ने शाश्वत मूल्यों का पालन कर समाज को बदला।

प्रश्न 10) “जब व्यावहारिकता का बखान होने लगता है, तब प्रैक्टिकल आइडियालिस्टों के जीवन से आदर्श धीरे-धीरे पीछे हटने लगते हैं और उनकी व्यावहारिक सूझबूझ ही आगे आने लगती है।” स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट बातें तो आदर्शों की करते हैं, परंतु जब उनका पालन करना होता है तो आदर्श पीछे हटने लगते हैं और व्यावहारिकता सामने आने लगती है। प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट(व्यवहारवादी लोग) हर काम में अपनी लाभ-हानि देखते हैं।ये केवल अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं।

प्रश्न 11) गाँधी जीअपने विलक्षण आदर्श में सफल क्यों रहे?

उत्तर: गाँधी जी ने अपने आदर्शों के साथ कोई समझौता नहीं किया। इसीलिए वह लोगों के दिलों तक अपनी बात पहुँचा सके तथा देश को स्वतंत्र करवा सके।

प्रश्न 12) "गाँधीजी ताँबे में सोना मिला करउसकी कीमत बढ़ाते थे।" आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: जैसे ताँबे में सोने की मिलावट करने पर ताँबे का मूल्य बढ़ जाता है, वैसे ही गाँधी जी ने व्यावहारिकता को आदर्शों के जितना ऊँचा उठा दिया। परिणामस्वरूप व्यावहारिकता भी आदर्शों के बराबर महत्वपूर्ण हो गई।

प्रश्न 13) "गाँधीजी प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट थे।" तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर: गाँधीजी प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट थे, परंतु उन्होंने कभी भी आदर्शों के मूल्य को कम नहीं होने दिया, बल्कि व्यावहारिकता को आदर्शों जितना ऊँचा उठा दिया। आदर्शों को लागू करने के लिए व्यावहारिकता की आवश्यकता होती है। गाँधी जी ने व्यावहारिकता का प्रयोग तो किया, परंतु आदर्शों के साथ समझौता नहीं किया।

प्रश्न 14) गाँधी जी ने कैसे सत्य और अहिंसा को अपना हथियार बनाया? पाठ के आधार पर स्पष्ट करें।

उत्तर: गाँधीजी ताँबे में सोने की मिलावट करके ताँबे के मूल्य को बढ़ा देते थे, अर्थात्व्यावहारिकता को आदर्शों के जितना ऊँचा उठा देते थे। उसी का परिणाम था कि उन्होंने सत्य, अहिंसा जैसे आदर्शों को अपनाया तथा अपनी व्यावहारिक बुद्धि से उसे जन-जन तक पहुँचाया। परिणाम स्वरुप केवल हमारा भारत देश ही स्वतंत्र नहीं हुआ, बल्कि संसार को भी सत्य एवं अहिंसा का संदेश दिया।

VASUNDHARAHINDI.COM

झेनकी देन

प्रश्न 1) लेखक ने जापानियों के दिमाग में स्पीड का इंजन लगने की बात क्यों कही है?

उत्तर: जापानियों के जीवन की रफ्तार बढ़ गई है। वे चलते नहीं, दौड़ते हैं; बोलते नहीं, बकते हैं। जब अकेले होते हैं, तब भी अपने आप से बातें करते हैं।एकमहीने के काम को एकदिन में कर लेना चाहते हैं। ऐसे लगता है उनके दिमाग में स्पीड का इंजन लगा है।

प्रश्न 2) जापान में चाय पीने की विधि को क्या कहते हैं?

उत्तर: जापान में चाय पीने की विधि को चा-नो-यू कहते हैं।

प्रश्न 3) जापान में जहाँ चाय पिलाई जाती है, उस स्थान की क्या विशेषता होती है?

उत्तर: जापान में जहाँचाय पिलाई जाती है,वहाँ पूर्ण शांति होती है और चटाई से बनी कुटिया में अधिकतम तीनलोग ही प्रवेश कर सकते हैं।

प्रश्न 4) टी-सेरेमनी में कितने आदमियों को प्रवेश दिया जाता था और क्यों?

उत्तर: टी-सेरेमनी में केवल तीन लोगों को प्रवेश दिया जाता है, क्योंकि टी-सेरेमनी में शांति मुख्य बात है।

प्रश्न 5) चाय पीने के बाद लेखक ने स्वयं में क्या परिवर्तन महसूस किया?

उत्तर:चाय पीने के बाद लेखक पहले दस-पंद्रहमिनट उलझन में रहे, फिर दिमाग की रफ़्तारधीरे-धीरे कम होने लगी। थोड़ी देर बाद उन्हें लगने लगा कि वह अनंत काल से इसी प्रकार जीवन जी रहे हैं,यहाँ तक कि सन्नाटा भी सुनाई दे रहा था। उन्हें ऐसे लग रहा थाकि जो कुछ है वह केवल वर्तमान है।

प्रश्न 6) लेखक के मित्र ने मानसिक रोग के क्या-क्या कारण बताए? आप इन कारणों से कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तरः जापानियों के जीवन की रफ्तार बहुत तेज है।यहाँ कोई चलता नहीं, बल्कि दौड़ता है; कोई बोलता नहीं, बकता है। येजब अकेले होते हैं, तो अपने आप से ही बात करते हैं। वहाँ के लोग एक महीने के काम को एक दिन में कर लेना चाहते हैं। दिमाग की रफ़्तार वैसे ही बहुत तेज होती है, उसमें स्पीड का इंजन लगा देने से वह और अधिक तेज दौड़ने लगता है। जब दिमाग का तनाव बढ़ जाता है, तो दिमाग रूपी इंजन टूट जाता है। जापानियों के मानसिक रोग का यही कारण है।

प्रश्न 7) लेखक के अनुसार “सत्य केवल वर्तमान है, उसी में जीना चाहिए।” लेखक ने ऐसा क्यों कहा होगा? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: अक्सर हम बीते समय की खट्टी-मीठी बातों में उलझे रहते हैं या फिर भविष्य के रंगीन सपने देखते हैं। वास्तव में यह दोनों काल ही झूठ है, क्योंकि एक तो चला गया है तथा दूसरा अभी आया ही नहीं। हमारे सामने जो वर्तमान है, वही सत्य है और उसी में जीना चाहिए।

प्रश्न 8) “हमारे जीवन की रफ्तार बढ़ गई है। यहाँ कोई चलता नहीं, बल्कि दौड़ताहै। कोई बोलता नहीं, बकता है। हम जब अकेले पड़ते हैं, तब अपने आप से लगातार बड़बड़ाते रहते हैं।” आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: जापानी लोगों के जीवन की रफ्तार बहुत तेज है। जापानी लोग जो काम अमेरिका के लोग एक महीने में करते हैं उसे वे एक दिन में करना चाहते हैं। इसलिए वे चलते नहीं, दौड़ते हैं; बोलते नहीं, बकते हैं। यहाँ तक कि अकेले में भी बड़बडाते रहते हैं। इसी कारण जापानियों को मनोविकार अधिक होते हैं।

प्रश्न 9) “सभी क्रियाएँ इतनी गरिमापूर्ण ढंग से की कि उनकी हर भंगिमा से लगता था मानो जय जयवंती के स्वर गूँज रहे हो।” आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: जब लेखक अपने मित्र के साथ चाय पीने पहुँचा,वहाँ उसे चाज़ीन मिला। उसने लेखक व उसके मित्र को झुक कर प्रणाम किया। उन्हें बैठने की जगह दिखाई। उसने अंगीठी सुलगाई, उस पर चायदानी रखी। फिर वह तौलिये से बर्तन साफ़ करने लगा। वह येसब क्रियाएँ इतनी गरिमापूर्ण ढंग से कर रहा था, ऐसे लग रहा था मानो जय जयवंती के सुर गूँज रहे हो।

प्रश्न 10) जापान के अस्सी प्रतिशत लोग किस रोग के शिकार हैं और इसका क्या कारण है?

उत्तर: जापान के लोग एकमहीने के काम को एक दिन में करना चाहते हैं। इसलिए वे चलते नहीं, दौड़ते हैं; बोलते नहीं, बकते हैं। यहाँतक कि अकेले में भी बड़बड़ाते रहते हैं। उनके दिमाग में स्पीड का इंजन लगा हुआ है। इसी कारण वहाँ के अस्सी प्रतिशत लोग मानसिक रोगों के शिकार हैं।

प्रश्न 11) “झेनकी देन” पाठ के आधार पर बताइए कि हमारा दिमाग हर वक्त कहाँ उलझा रहता है और क्यों?

उत्तर: मनुष्य का दिमाग या तो भूतकाल की खट्टी-मीठी यादों में खोया रहता है या फिर भविष्य के सुनहरे सपने देखने में उलझा रहता है।दोनों ही काल मिथ्या हैं। सत्य केवल वर्तमान है।

*****

VASUNDHARAHINDI.COM